In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

गुरु नानकदेव रचित

जपुजी

टीकाकार

वियोगी हरि

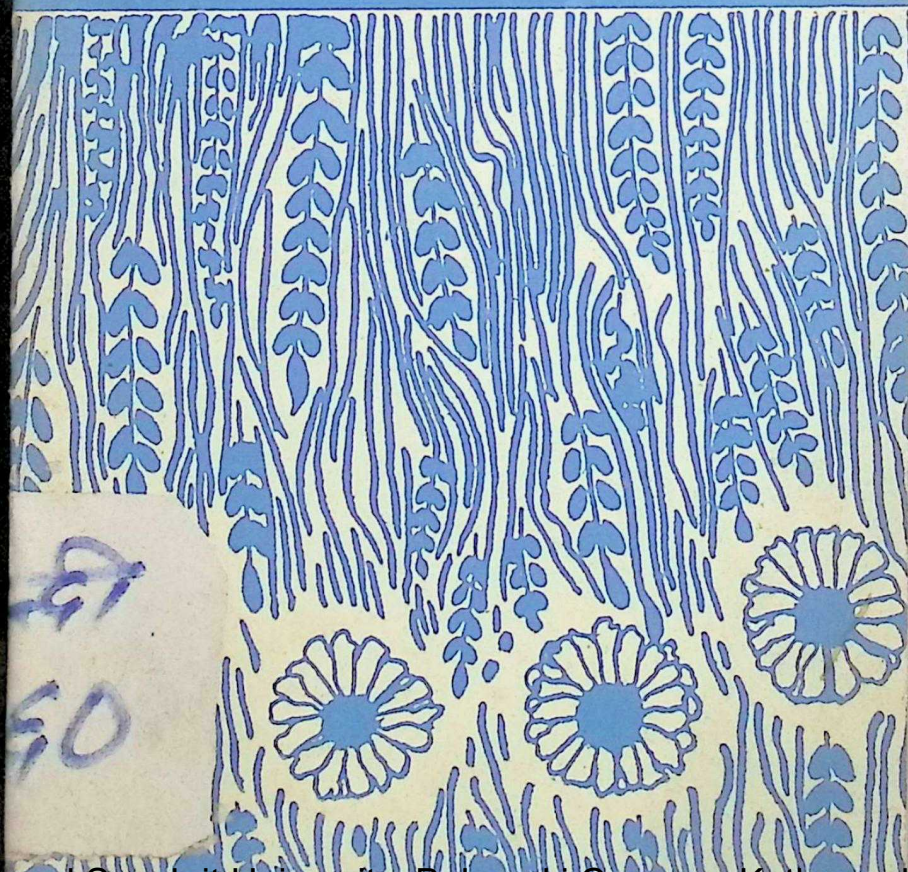

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री गुरु नानकदेव रचित

जपुजी

—सटीक—

न.१२०६

संपादक

वियोगी हरि

हिन्दी १६०

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९५८

सत्साहित्य प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

पहली बार : १९५८
मूल्य
पैंतीस नये पैसे

मुद्रक :
उद्योगशाला प्रेस,
दिल्ली

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रकाशकीय

हमारे संत-साहित्य में 'जपुजी' का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। सिक्खों के गुरु नानकदेव ने उसकी रचना की थी, लेकिन उसमें जो सारभरी बातें कही गई हैं, वे केवल सिक्खों के लिए ही नहीं बल्कि सबके लिए उपयोगी हैं। एक स्थान पर नानक कहते हैं, "जब हाथ, पैर और शरीर के दूसरे अंग धूल से सन जाते हैं तो वे पानी से धोने से साफ हो जाते हैं; मूत्र से जब कपड़े गंदे हो जाते हैं तो साबुन लगाकर उन्हें धो लेते हैं; ऐसे ही यदि हमारा मन पापों से मलिन हो जाय तो वह नाम के प्रेम-भाव से स्वच्छ हो सकता है", ऐसी लोकोपयोगी बातें स्थान-स्थान पर कही गई हैं।

'जपुजी' की इसी सार्वजनीन और सार्वकालिक उपयोगिता को देखकर सस्ते मूल्य में इसे अलग से भी निकाला जा रहा है, वैसे यह हमारे यहाँ से प्रकाशित 'संत-सुधा-सार' में आचुका है। सभी पाठक लाभ उठा सकें, इसलिए उसका अर्थ भी साथ में दे दिया गया है।

हमें आशा है कि गुरु नानक की इस उदात्त वाणी को जो भी पढ़ेगा लाभान्वित ही होगा।

—मन्त्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जपुजी और गुरु नानकदेव

गुरु ग्रंथ साहिब में 'महला १' शीर्षक के जितने भी अनेक रागों में पद संगृहीत हैं वे सब आदिगुरु नानकदेव के रचे हुए ह; परन्तु ग्रंथ साहिब के आदि में जो 'जपुजी' है वह इनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है। सिक्खों का 'जपुजी' के प्रति वही श्रद्धा-भाव है, जो हिन्दुओं का गीता के प्रति, अथवा बौद्धों का 'धम्म-पद' के प्रति। 'जपुजी' का स्थान इनकी रचनाओं में सबसे ऊँचा है। हरेक सिक्ख और पंजाब और सिन्ध के अनेक हिन्दू भी कण्ठस्थ कर नित्य प्रातःकाल 'जपुजी' का भक्तिपूर्वक मंगल-पाठ करते हैं।

प्रो० तेजासिंहजी ने 'जपुजी' के विषय में सत्य ही लिखा है, "जपुजी में मनुष्य-जीवन का सबसे उच्चकोटि का ज्ञान निहित है। इसमें हमारे जीवन के वास्तविक मनोरथ और इन्हें प्राप्त करने के साधन बतलाये हैं। इसमें मन को ऐसे साँचे में ढालने और उसके ऊपर ऐसी अवस्था लाने का ढंग बतलाया है कि जोभी धार्मिक उलझनें आ पड़ें उन्हें हम सुगमता से सुलझा सकें।"

'जपुजी' की रचना सूत्रात्मक-सी है। गुरु नानकदेव ने इसमें बहुत ही थोड़े शब्दों में ऊँचे-से-ऊँचे भावों को व्यक्त किया है। प्रो० तेजासिंह के शब्दों में "बड़े विस्तारवाले विचारों को ऐसा कसकर लिखा है कि मानो कूजे में दरिया बंद कर दिया है। पंजाबी भाषा से इतना कठिन काम पहले नहीं लिया गया था, और न अबतक ही किसीने लिया है।"

'जपुजी' का अर्थ अधिकतर मैंने विद्वद्वर प्रो० तेजासिंहजी की

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

टीका के आधार पर किया है। कहीं-कहीं पर मेकॉलीफ महोदय के अंग्रेजी भाषान्तर से भी सहायता मिली है।

गुरु नानकदेव

गुरु नानकदेव का जन्म तलवंडी गाँव में सं० १५२६ में हुआ था। यह गाँव लाहौर से लगभग तीस मील दूर है। इसे आजकल ननकाना साहब कहते हैं। सिक्खों का यह बहुत बड़ा तीर्थ-स्थान माना जाता है।

नानकदेव के पिता कालूचंद तलवंडी के पटवारी थे और खेती-बाड़ी भी करते थे। यह बचपन से ही बड़े प्रतिभावान् और शान्तस्वभाव के थे। इनके चित्त का झुकाव एकान्त-सेवन, सत्संग और ईश्वर-चिंतन की ओर सदा रहता था।

पिताने इन्हें विवाह-बन्धन में बाँध दिया। पत्नी का नाम सुलक्खनी था। कालांतर में इनके दो पुत्र हुए—श्रीचंद और लक्ष्मीचंद। श्रीचंद ने संन्यास लेकर सुप्रसिद्ध 'उदासी संप्रदाय' चलाया।

कालू ने अपने पुत्र नानक को एक मोदी के यहाँ नौकरी में लगाया, पर उसने इनकी लापर्वाही देखकर इन्हें नौकरी से अलग कर दिया। कहते हैं, एक दिन यह आटा तोल रहे थे। जब तोलते-तोलते 'तेरह' पर आये तो यह 'तेरा-तेरा' ही करते रह गये और न जाने कितने सेर आटा गाहक को तोलकर दे दिया।

तब पिता ने इन्हें खेती-बाड़ी में लगाया, पर वहाँ भी मन न लगा। पिता को उलटे सच्ची खेती करने का उपदेश देने लगे। फिर कुछ बनिज-व्यापार करने के लिए पिता ने कहा। पर बनिज-व्यापार पर भी उनका चित्त नहीं डोला; वे तो राम-नाम के सच्चे व्यापारी बन चुके थे। घर से निकल पड़े। देश-विदेश में भ्रमण करने लगे। साथ में इनका एक पक्का साथी रबाब बाजे पर भजन गानेवाला हो लिया, जिसका नाम मर्दाना था। इनकी यात्रा के कई सुन्दर प्रसंग प्रसिद्ध हैं।

कामरूप व जगन्नाथपुरीतक पूरब के देशों में भी गुरु नानकदेव गये थे। इस यात्रा में गुरु नानक मुसलमान फकीरों या कलंदरों की जैसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

टोपी पहनते थे और माथे पर हिंदू साधुओं की तरह तिलक भी लगाते थे। गले में माला भी डाल लेते थे। हिंदू और मुसलमान दोनों की मिली-जुली विचित्र-सी वेश-भूषा रखते थे।

आदिगुरु ने दक्षिण भारत की भी यात्रा की थी, और सिंहल-द्वीप भी पहुँचे थे। कहा जाता है कि 'प्राण-संगली' ग्रंथ को उन्होंने सिंहल में बैठकर ही रचा था।

इसी प्रकार पश्चिम की यात्रा में वे मक्केतक गये। प्रसिद्ध है कि वहाँ काबे की तरफ़ पैर फैलाकर यह लेट गये। इस बेअदबी को देखकर वहाँ के मुल्ले ने डाँटते हुए पूछा, "अल्लाह की तरफ तुम क्यों अपने पैर फैलाये हुए हो ?" इन्होंने जवाब में उससे कहा—"अच्छा भाई, तो जिधर अल्लाह न हो उधर मेरे पैर घुमादो।" पर ऐसी कौन-सी दिशा थी, जहाँ अल्लाह का वास न हो ! मुल्ला हैरान हो उठा।

गुरु नानकदेव ने इस प्रकार देश-देशान्तरों में सत्य और ईश्वर की भक्ति का प्रचार किया और मौज से हरिनाम का अनमोल रस लुटाया। हिन्दू और मुसलमान दोनों ने उनके ऊँचे व गहरे उपदेशों को प्रेम से सुना और ग्रहण किया।

अपने प्रिय शिष्य लहिणा को, जो बाद में गुरु अंगद के नाम से प्रसिद्ध हुए, अपनी गद्दी का उत्तराधिकारी बनाकर गुरु नानकदेव अंतिम समय में एक पेड़ के नीचे जा बैठे और प्रभु के नाम-स्मरण में लीन हो गये। गुरु अंगद चरणों पर गिर पड़े। सब शिष्य और कुटुम्बी विलाप करने लगे। पर गुरु तो आनन्दमग्न थे। हुक्म किया सिक्ख-मंडली को 'सोहिला' गाओ। सोहिला समाप्त होने पर 'जपुजी' का जब अंतिम 'सलोक' कहा गया, तो चादर ओढ़ली और 'वाह गुरु' कहते-कहते चोला छोड़ दिया, ब्रह्मलीन हो गये।

—वियोगी हरि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जपुजी

१ ॐकार सति नामु करता पुरुखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ †
आदि सचु जुगादि सचु है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ ‡
सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार ॥
चुप्पै चुप्प न होवई जे लाइ रहा लिवतार ॥
भुखिआ भुख न उत्तरी जे वंना पुरीआ भार ॥
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चल्ले नालि ॥
किव सचिआरा होइऐ किव कूड़ै तुट्टै पालि ।
हुकमि रजाई चल्लणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥

---

† उस गुरु की कृपा से, जो एक ही है, जिसका नाम सत्य है अर्थात् जो सदा एकरस रहता है, जो सब का सृष्टा है, जो समर्थ पुरुष है, जिसे किसीका भी भय नहीं, न किसीसे जिसका बैर है, जिसका अस्तित्व काल की पहुँच से परे है, जिसका जन्म नहीं हैं, जो स्वयंभू है।

यह सिक्ख-धर्म का मूल मंत्र है।

‡ सबसे पहले, जबकि और कुछ भी अस्तित्व में नहीं था, केवल सत्यरूप परमात्मा था। जबकि युगों का विभाग होने लगा, तब भी वह सत्य ही था। अबभी सत्य है। नानक आगे भी वह सत्य ही रहेगा।

१. चिंतन करने से (सत्य) समझ में नहीं आ जाता, भले ही लाखों वार फिर-फिर उसका मैं चिन्तन करता रहूँ।

चुप या मौन रहने से भी मन में एक-न-एक प्रश्न का उठना रुकता नहीं, चाहे मैं कितने ही एकाग्र चित्त से ध्यान करूँ।

भूखा रहने से उसके मिलन की भूख शान्त होने की नहीं, भले ही मैं सारे संसार को अपने काबू में करलूँ।

लाखों सयानपन हों, उस सत्यतक एक भी नहीं पहुँचता, तो फिर हम सत्यमय हों तो कैसे ? और हमारे उसके बीच में जो दीवार खड़ी है वह कैसे टूटे ? परदा कैसे हटे ? (एक ही उपाय है) उस आदेश देनेवाले परमेश्वर के आदेश पर चलना, उसकी आज्ञा के अनुसार आचरण करना। और वह आज्ञा हमारे साथ ही लिखी हुई है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हुकमी होवनि आकार, हुकमु न कहिआ जाई ॥
हुकमी होवनि जीअ, हुकमि मिलै वडिआई ॥
हुकमी उत्तमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
हुकमै अन्दरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु। गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥
गावै को गुण वडिआईआ चार। गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥
गावै को साजि करे तनु खेह। गावै को जीअ लै फिरि देह ॥
गावै को जाये दिसै दूरि। गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥

---

२. उस आज्ञा से सृष्टि के सारे आकार बनते हैं। उस आज्ञा को कहा नहीं जा सकता—अनिर्वचनीय है वह।

उसी आज्ञा से जीवों का सृजन होता है, और उसीसे जीवों को मनुष्य की ऊँची श्रेणी प्राप्त होती है।

उसीसे मनुष्य उत्तम गति पाता है, और उसीसे नीच गति; वह आज्ञा जैसे कर्मों को लिख देती है वैसे ही दुःख और सुख सब पाते हैं।

उस आज्ञा से किसीको मुक्ति का दान मिल जाता है, तो कितने ही अनेक योनियों में चक्कर काटते रहते हैं।

सभी उसकी आज्ञा के अन्दर हैं; कोई भी उसकी आज्ञा के बाहर नहीं।

नानक कहते हैं—इस आज्ञा को यदि कोई अच्छी तरह समझले, तो फिर वह कभी यह नहीं कहेगा कि यह या वह मैंने किया है।

अर्थात्, 'अहंभाव' का उसमें लेश भी नहीं रहेगा।

३. कोई उसकी शक्ति को गाता है, उसका बखान करता है, जिसे कि उससे शक्ति मिली है;

कोई उसकी दी हुई वस्तुओं को गाता है उसके चिह्न समझकर;

कोई उसके गुणों और उसकी सुन्दर-सुन्दर महिमाओं को गाता है; और कोई कठिन-कठिन विद्याओं के द्वारा उसका गान करता है;

कोई यह समझकर उसका गान करते हैं कि वह देह को बनाकर फिर उसे मिट्टी कर देता है, और कोई-कोई यह समझकर कि वह जीव लेकर फिर दे देता है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कथना कथी न आवै तोटि । कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥
देदा दे लैदे थकि पाहि । जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥
हुकमी हुकमु चलाए राहु । नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥
फेरि कि अग्गै रखीए जितु दिसै दरबारु ॥
मुहौ कि बोलणु बोलीए जितु सणि धरे पिआरु ॥
अमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

कोई गाता है कि वह परमात्मा बहुत दूर, परे से परे, प्रतीत होता है; और कोई उसे अपने सामने, बिल्कुल निकट, देखकर गाता है।

करोड़ों ने कहा, कहा और फिर कहा, पर उसकी कथनी—उसकी गुण-गाथा—कभी समाप्त नहीं हुई।

वह ऐसा दाता है कि दिये ही जाता है, पर लेनेवाला ही लेते-लेते थक जाता है। युगों-युगों से उसका दिया सब खाते ही आये हैं।

आज्ञा देनेवाले की आज्ञा वह सबकुछ चला रही है। नानक कहते हैं—वह लापरवाह हमेशा खुद आनन्दमग्न रहता है।

४. वह स्वामी 'सत्य' है; उसका नाम भी सत्य है। और उसका बखान करने के भाव या ढंग अनगिनती हैं।

लोग निवेदन करते हैं और माँगते हैं कि, 'स्वामी, तू हमें देदे।' और उन्हें वह दाता देता है।

फिर क्या उसके आगे रखें कि जिससे उसका (मेहर का) दरबार दीख पड़े? और इस मुख से हम क्या बोल बोलें कि जिन्हें सुनकर वह स्वामी हमसे प्रेम करे?

अमृत-वेला में—मंगलमय प्रभात-काल में, उसके सत्य नाम का, और उसकी महिमा का विचार करो, स्मरण करो।

कर्मों के अनुसार चोला तो बदल लिया जाता है; किन्तु मोक्ष का द्वार उसकी दया से ही खुलता है।

नानक कहते हैं—यों जानो तुम कि वह सत्यरूप प्रभु आपही सब कुछ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

थापिआ न जाइ कीता न होइ। आपे आपि निरंजनु सोइ ॥
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु। नानक गाविऐ गुणी निधानु ॥
गाविऐ सुणिऐ मनि रखी भाउ। दुख परहरि सुखु घरि लै जाउ ॥
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं। गुरमुखि रहिआ समाई ॥
गुरु ईसरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥
तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥

---

५. न वह किसीके द्वारा स्थापित होता है, और न बनाया जाता है। वह तो स्वयं ही है, और निरंजन है—माया से परे है।

जिसने उसकी सेवा की है उसे मान-प्रतिष्ठा मिली है। सो हे नानक, उसी गुण-निधान का गुण-गान किया जाये।

उसके गुण गाने और सुनने चाहिएँ, और भावपूर्वक अपने मन में रखने चाहिएँ।

वह प्रभु हमें दुखों से छुड़ाकर अपने सुखधाम में ले जायगा।

गुरु की वाणी ही नाद अर्थात् आदि शब्द है, और वही वेद है, कारणकि गुरु के मुख में परमात्मा स्वयं वास करता है।

गुरु ही शिव हैं, गुरु ही विष्णु और गुरु ही गोरख (गो अर्थात् पृथिवी के रक्षक) हैं और गुरु ही ब्रह्मा है। पार्वती भी गुरु हैं, और माता लक्ष्मी भी वही हैं।

जो मैं उसे जानलूँ तो उसका बखान नहीं कर सकता, क्योंकि वह कथनी से परे है।

किन्तु गुरु ने एक बार मुझे समझा दिया है कि जीव को देनेवाला एक परमात्मा ही है, और मुझे वह कभी नहीं भूलना चाहिए।

६. यदि मैं उसे रिझा सकूँ तो तीर्थों में स्नान करूँ; यदि मैं उसे रिझा नहीं सकता तो तीर्थों में नहाने से मेरा क्या बनेगा!

देखता हूँ, जितनी भी सृष्टि सिरजी गई है, इसमें बिना कर्म या साधन किये क्या मिल सकता है, जिसे मैं लूँ? (फिर परमात्मा का मिलना तो बिना जतन के अत्यंत कठिन है।)

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मति विसु रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मैं विसरि न जाई ॥६॥
जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥
जे तिसु नदरि न आवई त बात न पुच्छै केइ ॥
चंगा नाउ रखाइकै जसु कीरति जगि लेइ ॥
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोई करे ॥७॥
सुणिऐ सिद्ध पीर सुरि नाथ । सुणिऐ धरति धवल आकास ॥
सुणिऐ दीप लोअ पाताल । सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥
नानक भगता सदा विगास । सुणिऐ दूख पाप का नास ॥८॥

यदि गुरु का उपदेश (ध्यान से) सुनोगे तो तुम्हारी बुद्धि में से ही हीरे-मोती आदि सारे रत्न अर्थात् ऊँचे-से-ऊँचे आध्यत्मिक गुण प्रकट हो पड़ेंगे। (तीर्थों में भटकने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।)

गुरु ने एक बार मुझे समझा दिया है कि जीव को देनेवाला एक परमात्मा ही है, और मुझे वह कभी नहीं भूलना चाहिए।

७. मनुष्य यदि चारों युग जीये, या इससे भी दसगुनी उसकी आयु हो जाये, और नवों खंडों में वह विख्यात हो जाये, सब लोग उसके साथ चलने लगें,

दुनियाभर के लोग उसे अच्छा कहें, और उसके यश का बखान करें, पर यदि परमात्मा ने उसपर अपनी (कृपा) दृष्टि नहीं की, तो कोई उसकी बात भी पूछनेवाला नहीं—उसकी कुछ भी कीमत नहीं।

वह तब कीट से भी तुच्छ कीट माना जायेगा। दोषी भी उसपर दोषारोप करेंगे।

नानक कहते हैं—वह निर्गुणी को भी गुणी कर देता है, और जो गुणी है उसे और भी अधिक गुण बख्श देता है।

पर ऐसा कोई भी दृष्टि में नहीं आता, जो परमात्मा को गुण दे सके।

८. गुरु का उपदेश सुनने से सिद्धों, पीरों और बड़े-बड़े नाथों की असलीयत का पता लग जाता है। (अथवा, असली सिद्धों, पीरों और बड़े-बड़े नाथों की अवस्था को वह प्राप्त कर लेता है।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सुणिऐ ईसरू वरमा इंदु। सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥
सुणिऐ जोग-जुगति तनि भेद। सुणिऐ सासत सिमृति वेद ॥
नानक भगता सदा विगासु। सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥
सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु। सुणिऐ अठिसठि का इसनानु ॥
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु। सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥
नानक भगता सदा विगासु। सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

गुरु का उपदेश सुनने से पृथिवी का, उसे टिकाये रखनेवाले (कल्पित) बैल का, और आकाश का सही-सही ज्ञान हो जाता है।

[**विशेष**—'जपुजी' की १६वीं पौड़ी में इस 'धवल' अर्थात् बैल का स्पष्टीकरण किया गया है।]

गुरु की शिक्षा सुनने से द्वीपों, लोकों और पातालों का ठीक-ठीक पता लग जाता है।

और तब काल की दाल नहीं गल पाती।

नानक कहते हैं—(गुरु का उपदेश सुननेवाले) भक्तजन सदा प्रफुल्लित रहते हैं। (गुरु का उपदेश) सुनने से उनके सारे दुःख और पाप नष्ट हो जाते हैं।

९. गुरु का उपदेश सुनने से शिव, ब्रह्मा और इन्द्र की दशा का असली पता लग जाता है।

और मन्दबुद्धि की भी भारी प्रशंसा होने लगती है।

उसे सुनने से योग की युक्ति या मार्ग, और घट के रहस्य खुल जाते हैं।

गुरु का उपदेश सुनने से शास्त्रों, स्मृतियों और वेदों की वास्तविकता का ज्ञान हो जाता है।

नानक कहते हैं—ऐसे भक्तजन सदा प्रफुल्लित रहते हैं। (गुरु-उपदेश) सुनने से उनके सारे दुःख और पाप नष्ट हो जाते हैं।

१०. गुरु का उपदेश सुनने से सत्य, संतोष और दिव्यज्ञान प्राप्त होता है।

उसे सुनना अड़सठ तीर्थों में स्नान करने के समान है।

गुरु का उपदेश सुनने से ज्यों-ज्यों उसे मनुष्य पढ़ता है, त्यों-त्यों वह मान-प्रतिष्ठा पाता है।

उसे सुनने से चित्त का निरोध होकर उसका सहज ध्यान लग जाता है।

नानक कहते हैं—गुरु का उपदेश सुननेवाले भक्तजन सदा प्रफुल्लित रहते हैं। उनके सारे दुःख और पाप नष्ट हो जाते हैं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सुणिऐ सरा गुणा के गाह। सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु। सुणिऐ हाथ हाथ होवै असगाहु ॥
नानक भगता सदा विगासु। सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥
मंने की गति कहि न जाइ। जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु। मंने का बहि करनि विचारु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ। जे को मंनि जाणै मंनि कोइ ॥१२॥
मंने सुरति होवै मनि बुधि। मंनि सगल भवण की सुधि ॥
मंने मुहि चोटा ना खाइ। मंने जम कै साथि न जाइ ॥
ऐसा नामु निरंजन होइ। जे को मंनि जाणै मनि कोई ॥१३॥

---

११ गुरु का उपदेश सुनने से मनुष्य गुणों के सागर की थाह पा लेता है—गहन-से-गहन गुणों को दृढ़तापूर्वक ग्रहण कर लेता है।

उसे सुनने से मनुष्य शेख, पीर और बादशाह बन जाते हैं। अथवा, यह जान जाते हैं कि धार्मिक तथा सांसारिक दोनों क्षेत्रों का नेता एकसाथ कैसे बना जाता है।

गुरु का उपदेश सुनने से अन्धे को भी रास्ता सूझ जाता है;

उसे सुनने से वह अथाह की भी थाह पा जाता है।

नानक कहते हैं—ऐसे भक्तजन सदा प्रफुल्लित रहते हैं। उनके सारे दुःख और पाप नष्ट हो जाते हैं।

१२. जो उसकी आज्ञा पर चलता है उसकी (पहुँची हुई) अवस्था का वर्णन नहीं हो सकता; यदि कोई वर्णन करने का यत्न करता है, तो उसे पीछे पछताना या लज्जित होना पड़ता है।

लिखने के लिए न कागज़ है, न क़लम, और न लिखनेवाला ही उस अवस्था का, जिसे कि उसकी आज्ञा को माननेवाला प्राप्त कर लेता है।

ऐसा पवित्र और अकथ है उसके लिए गुरु का नाम—

जो उसकी आज्ञा को हृदय से मानने की रीति जानले।

१३. उसकी आज्ञा पर चलने से ऊँची (आध्यात्मिक) वृत्ति जागृत हो उठती है, अथवा परा बुद्धि विकसित हो जाती है।

उससे सारे लोकों का ज्ञान हो जाता है।

उसे मानने से मनुष्य को दण्ड नहीं मिलता; और वह यम के मार्ग पर नहीं जाता—काल की पकड़ से छूट जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मंने मारगि ठाक न पाइ। मंने पति सिउ परगटु जाइ ॥
मंने मगु न चलै पंथु । मंने धरम सेती सनबंधु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ। जो को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥
मंने पावहि मोख दुआरु । मंनि परवारै साधारु ॥
मंने तरै तारै गुरु सिख। मंनि नानक भवहि न भिख ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ । जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥
पंच परवाण पंच परधानु । पंचे पावहि दरगहि मानु ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु । पंचा का गुरु इकु धिआनु ॥

ऐसा पवित्र और अकथ है उसके लिए गुरु का नाम,—
जो उसकी आज्ञा को हृदय से मानने की रीति जानले।

१४. उसकी आज्ञा पर चलने से रास्ते में कोई रोक-टोक नहीं रहती; मनुष्य फिर मान-प्रतिष्ठा के साथ (सन्मार्ग पर) चलता है।

उसे जो मानता है वह मामूली रास्ते पर नहीं, बल्कि राजपथ पर चलता है।

[विशेष—'मगुन' भी एक पाठ है। तब यह अर्थ किया गया है कि वह भगवत्प्रेम में मग्न होकर आगे बढ़ जाता है।]

उसका धर्म के साथ (दृढ़) संबंध हो जाता है।

ऐसा पवित्र और अकथ है उसके लिए गुरु का नाम,—
जो उसकी आज्ञा को हृदय से मानने की रीति जानले।

१५. उसकी आज्ञा मान लेने से मनुष्य मोक्ष के द्वार पर पहुँच जाता है। वह अपने परिवार का भी उद्धार कर लेता है।

उसकी आज्ञा पर चलने से वह स्वयं तर जाता है, और जिसे वैसा उपदेश देता है वह भी तर जाता है।

जो उसकी आज्ञा को मानता है, वह भीख नहीं माँगता फिरता।

ऐसा पवित्र और अकथ है उसके लिए गुरु का नाम—
जो उसकी आज्ञा को हृदय से मानने की रीति जानले।

१६. (ऐसे गुरु-उपदेश पाये हुए) पंच ही प्रमाणरूप हैं; अथवा, परमात्मा की दृष्टि में 'स्वीकृत' हैं, और वे ही सबमें प्रधान हैं, प्रतिष्ठित हैं। वे ही उस प्रभु के दरबार में मान पाते हैं।

[विशेष—ग्रन्थ साहब की टीका में भाई चंदासिंह ने 'पंच' का अर्थ इस प्रकार किया है—(१) जो ईश्वर की मरज़ी पर चलते हैं, (२) जो उसे सत्यरूप मानते

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जे को कहै करै वीचारु । करते कै करणै नाही सुमारु ॥
धौलु धरमु दइआ का पूत । संतोखु थापि रखिआ जिनि सूत ॥
जे को बुझै होवै सचिआरु । धवलै उपरि केता भारु ॥
धरती होरु परे होरु होरु । तिसते भारु तलै कवणु जोरु ॥
जीअ जाति रंगा के नाव । सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ । लेखा लिखिआ केता होइ ॥
केता ताणु सुआलिहु रूपु । केती दति जाणै कौणु कूतु ॥
कीता पसाउ एको कवाउ । तिसते होए लख दरीआउ ॥

हैं, (३) जो उसका गुन-गान करते हैं, (४) जो उसका नाम सुनते हैं, और (५) जो उसकी आज्ञा का पालन करते हैं ।]

पंचों से ही राजा-महाराजाओं के दरबार शोभायमान होते हैं ।

इनका गुरु केवल परमात्मा का ध्यान होता है ।

यदि कोई मनुष्य कोई बात कहे, तो वे उसपर तात्त्विक विचार करते हैं, उसे बिना विचार किये तुरंत मान नहीं लेते ।

सिरजनहार के कार्यों की कोई गिनती नहीं ।

(जो यह विश्वास किया जाता है कि) नन्दी (शिवजी का बैल) पृथिवी को उठाये हुए है वह नन्दी वस्तुतः धर्म है, प्रभु की कृपा का रचा हुआ 'नियम' है, जिसने सारे ब्रह्मांड को धैर्य के सहारे थाम रखा है ।)

जिसने इसको समझ लिया, वह सत्य का साक्षात्कार कर सकता है ।

नन्दी पर कितना बड़ा भार लदा होगा !

इस पृथिवी से परे पृथिवी है—उससे भी परे और उससे भी परे पृथिवी है ।

यह सारा भार यदि उस नन्दी के ऊपर रखा हुआ है, तो वह नन्दी फिर किसके आधार पर स्थित है ?

जीवों की अनेक जातियों और अनेक रंगों के नामों को एक चलती हुई क़लम ने लिखा है—अर्थात् लेखे-हिसाब का प्रवाह अनन्त है ।

इनका कौन लेखा कर सकता है ? और वह कितना बड़ा लेखा बनेगा !

उसकी कितनी बड़ी शक्ति है, और कैसा सलोना रूप है ! उसकी बख़्शीसों का कोई पार ! कौन कूत सकता है उन्हें ?

एक ही शब्द से, एक ही आज्ञा से सृष्टि को विस्तृत कर दिया; उसकी आज्ञा से सृष्टि की लाखों नदियाँ वह निकलीं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

कुदरति कवण कहा वीचार। वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार। तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥
असंख जप, असंख भाउ। असंख पूजा असंख तप ताउ ॥
असंख गरंथ मुखि वेदपाठ। असंख जोग मनि रहहि उदास ॥
असंख भगत गुण गिआन वीचार। असंख सती असंख दातार ॥
असंख सूर मुह भख सार। असंख मोनि लिव लाइ तार ॥
कुदरति कवण कहा वीचारू। वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भलीकार। सदा सलामति निरंकार ॥१७॥
असंख मूरख अंधघोर। असंख चोर हरामखोर ॥
असंख अमर करि जाहि जोर। असंख गलवढ हत्तिआं कमाहि ॥
असंख पापी पाप करि जाहि। असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥
असंख मलेछ मलु भखि खाहि। असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥

---

१७. असंख्य प्रकार के तेरे मंत्र-जप हैं, और असंख्य ही भक्ति-भाव के मार्ग। असंख्य प्रकार की तेरी पूजा है, और असंख्य तप और साधन।

मेरी क्या बिसात, जो मैं तेरा बखान कर सकूँ ?

मैं तो तुझपर एक बार भी निछावर होनेलायक नहीं। अच्छा-भला वही है, जो तुझे भावे। हे निराकार ! तू सदा सलामत रहता है।

असंख्य लोग वेदों और अन्य पवित्र ग्रन्थों का मुख से पाठ करते हैं। और असंख्य योगी मन में जगत् की ओर से उदासीन रहते हैं।

असंख्य भक्तजन तेरे गुणों का और तत्त्व-दर्शन का चिंतन करते हैं।

ऐसे ही, सच्चे और दानी असंख्य लोग हैं। और असंख्य शूरवीर तलवार की चोटें सामने खाते हैं।

असंख्य साधक मौन व्रत धारणकर तुझसे लौ लगाते हैं।

मेरी क्या बिसात, जो मैं तेरा बखान कर सकूँ ?

मैं तो तुझपर एक बार भी निछावर होनेलायक नहीं। अच्छा-भला वही है, जो तुझे भावे। हे निराकार ! तू सदा सलामत रहता है।

१८. असंख्य लोग मूर्ख और घोर अन्धे हैं;
असंख्य चोर और पराया धन हरण करनेवाले हैं;
असंख्य लोग ऐसे हैं, जो बलात्कारपूर्वक राज्य स्थापित कर लेते हैं;
और गला काटनेवाले और हत्यारे भी असंख्य हैं;

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नानकु नीचु कहै वीचारु । वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार । तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥
असंख नाव असंख थाव ।
अगंम अगंम असंख लोअ । असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥
अखरी नामु अखरी सालाह । अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥
अखरी लिखणु बोलणु बाणि । अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥
जिनि एहि लिखे तिस सिरि नाहि । जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥
जेता कीता तेता नाउ । विणु नावै नाही को थाउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचार । वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार । तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥

असंख्य पापी हैं, जिन्हें पाप करते हुए गर्व होता है;
असंख्य असत्य बोलनेवाले असत्य में ही पड़े-पड़े चक्कर काटते हैं;
असंख्य गंदे लोग गंदी कमाई से ही अपने पेट भरते हैं;
और असंख्य निन्दक पराई निन्दा करते और सिर पर पापों की गठरी लादते हैं।
तुच्छ नानक कहता है, मैं तो तुझपर एक बार भी निछावर होनेलायक नहीं।
अच्छा-भला वही है, जो तुझे भावे। हे निराकार ! तू सदा सलामत रहता है।

१९. असंख्य तेरे नाम हैं, और असंख्य तेरे धाम;
तेरे अगम्य लोक भी असंख्य, असंख्य हैं;
असंख्य कहते हुए भी सिर पर जैसे भार पड़ता है।
[अथवा, अपनी सारी बुद्धि समेटकर तेरा नाम जपनेवाले असंख्य हैं।
अथवा, जो तेरा वर्णन करने का यत्न करते हैं, वे मानों सिर पर पाप ढोते हैं; यह उनका अहंकार ही है, जो वर्णनातीत के वर्णन करने का दम भरते हैं।]
अक्षरों के सहारे हम तेरा नाम लेते हैं, और अक्षरों के ही सहारे तेरी स्तुति करते हैं;
अक्षरों के द्वारा हम तत्त्व-विचार करते हैं, और अक्षरों के द्वारा ही तेरे गुण गाते हैं;
अक्षरों से हम वाणी को लिखते और बोलते हैं; अक्षरों के सहारे से ही तेरे साथ हमारा जो संबन्ध है उसका वर्णन करते हैं।
भाग्य पर जो अक्षर लिखा दिये गये हैं उन्हींसे भाग्य का हिसाब लगाया जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

भरीऐ हथु पैरु तनु देह। पाणी धोतै उतरसु खेह॥
मूत पलीती कपडु होइ। दे साबुणु लईऐ ओहु धोइ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि। ओहु धोपै नावै कै रंगि॥
पुंनी पापी आखणु नाहिं। करि करि करणा लिखि लै जाहु॥
आपे बीजि आपे ही खाहु। नानक हुकमी आवहु जाहु॥२०॥
तीरथु तपु दाइआ दतु। जे को पावे तिल का मानु॥
सणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ। अंतरगति तीरथि मनि नाउ॥
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ। विणु गुण कीते भगति न होइ॥
सअसति आथि बाणी बरमाउ। सति सहाणु सदा मनिचाउ॥

किन्तु जिसने उन अक्षरों को लिखा है, वह उनकी सीमा से परे है।

तू जैसी आज्ञा देता है वैसा हम पाते हैं।

जैसी तेरी सृष्टि की रचना, वैसे ही तेरा नाम भी महान्।

ऐसी कोई जगह नहीं, जहाँ कि तेरा नाम न हो।

मेरी क्या बिसात, जो मैं तेरा बखान कर सकूँ!

मैं तो तुझपर एक बार भी निछावर होनेलायक नहीं। अच्छा-भला वही है, जो तुझे भावे। हे निराकार! तू सदा सलामत रहता है।

२०. जब हाथ, पैर और शरीर के दूसरे अंग धूल से सन जाते हैं, तो वे पानी से धोने से साफ़ हो जाते हैं।

मूत्र से जब कपड़े गंदे हो जाते हैं तो साबुन लगाकर उन्हें धो लेते हैं।

ऐसे ही यदि हमारा मन पापों से मलिन हो जाये, तो वह नाम के प्रेम-भाव से स्वच्छ हो सकता है।

केवल कह देने से मनुष्य न पुण्यात्मा बन जाते हैं, न पापी;

किन्तु वे तुम्हारे कर्म हैं, जिन्हें तुम अपने साथ लिखते जाते हो; तुम्हारे कर्म तुम्हारे साथ-साथ जाते हैं।

आपही तुम जैसा बोते हो वैसा खाते हो।

नानक कहते हैं—यह तुम्हारा आवागमन उसकी आज्ञा से ही हो रहा है।

२१. तीर्थाटन, तप, दया और पुण्य-दान जो करता है, उसे भले ही तिलभर मान मिल जाये,—

[अथवा, प्रभु के नाम का एक कण भी किसीको मिल जाये तो मानों उसने तीर्थाटन, तप, दया, और पुण्य-दान कर लिये।]

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कवणु सु वेला वखतु कवणु, कवणु थिति कवणु वारु ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु, जितु होआ आकारु ॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥
वखतु न पाओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु न कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
किवकरि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाण ॥
नानक आखणि सभु को आखै इकदू इकु सिआण ॥
वड्डा साहिबु वड्डी नाई कीता जाका होवै ॥
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहे ॥२१॥

किंतु जो प्रभु का नाम सुनता है, उसपर चलता है, और अंतःकरण से उसकी भक्ति करता है, उसने सारे तीर्थों का स्नान कर लिया, और अपने सब पापों को धो डाला।

जितने भी गुण हैं सब तेरे ही हैं ; मुझमें एक भी गुण नहीं।

आचरित गुण के बिना भक्ति हो नहीं सकती।

धन्य है उसे जो स्वतः माया है, वाणी है और ब्रह्म है !

वह सत्य है, सुन्दर है, और अंतर में सदा आनन्द के रूप में रहता है।

वह कौन-सा समय था, जब सृष्टि रची गई ? वह क्या तिथि थी, और कौन-सा दिन ? वह क्या ऋतु थी, और कौन-सा मास ?

पंडितों को उसका पता नहीं लगा ; यदि पता होता, तो वे उसका अवश्य पुराणों में उल्लेख करते।

काज़ियों को भी उस वक़्त का इल्म नहीं था ; यदि उन्हें इल्म होता तो कुरान में उन्होंने उसे दर्ज़ किया होता।

और न किसी योगी को उस तिथि, उस वार और उस ऋतु और उस मास का ज्ञान है।

उस करतार को ही उस समय का पता है कि उसने सृष्टि की रचना कब की थी।

मैं उसे क्या कहकर पुकारूँ, और कैसे उसकी स्तुति करूँ ? उसका बखान कैसे करूँ, और कैसे उसे जानूँ ?

नानक ! एक-से-एक बुद्धिमान उसके विषय में अपनी-अपनी समझ से कहते हैं कि वह 'कैसा है' और 'कैसा नहीं'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पाताला पाताल लख आगासा आगास।
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात।
सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु।
नानक वड्डा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥
सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ।
नदीआ अंतै वाह पवहि समंदरि न जाणीअहि।
समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥
अंतु न सिफती कहणि न अंतु। अंतु न करणै देणि न अंतु ॥
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु। अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥

पर (समझ में तो इतना ही आया है कि) वह स्वामी महान् है, उसका नाम भी महान् है; उसीका किया-धरा सब कुछ होता है; और कोई कुछ नहीं कर सकता।

नानक! जो यह अभिमान करता है कि मैंने यह किया है, वह स्वामी के लोक में मान नहीं पायेगा।

२२. लाखों ही पाताल हैं, और उनके भी पाताल हैं उसकी रचना में;
इसी प्रकार लाखों आकाश हैं और उनके भी आगे आकाश हैं।
उसका अंत खोजते-खोजते वेद थक गये—केवल एक ही बात वेदों ने कही (कि उसकी रचना का अंत नहीं।)
मुसलमानों की किताबों ने कहा है कि अठारह हजार आलम हैं उसकीरचना में।
पर असल में मतलब एक ही है दोनों का—(याने उसकी रचना का अंत नहीं।)
गिनती हों तो उसे लिखा जाये; लिखनेवाले का ही अंत हो जाता है, पर लेखे का अंत नहीं मिलता।
नानक कहते हैं—उसे महान् ही कहना चाहिए; वह कितना महान् है इसे वह खुद ही जानता है।

२३. स्तुति करनेवाले स्तुति करते हैं, पर इसकी महिमा का पता उन्हें भी नहीं।
जैसे, नदियाँ और नाले समुद्र में जाकर गिरते हैं, पर उसकी पूरी गंभीरता और विशालता का ज्ञान उन्हें नहीं होता।
जिन राजाओं और सम्राटों के पास संपत्ति के समुद्र और धन के पर्वत हों, वे उस कीड़ी के भी समान नहीं, जो अपने हृदय से परमात्मा को नहीं बिसराती।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अंतु न जापै कीता आकारु। अंतु न जापै पारावारु॥
अंत कारणि केते बिललाहि। ताके अंत न पाए जाहि॥
एहु अंतु न जाणै कोइ। बहुता कहीऐ चहुता होइ॥
वड्डा साहिबु ऊचा थाउ। ऊचे उपरि ऊचा नाउ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ। तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ॥
जेवडु आपि जाणै आपि आपि। नानक नदरी करमी दाति॥२४॥
बहुता करमु लिखिआ न जाइ।
वडा दाता तिलु न तमाइ। केते मंगहि जोध अपार॥

---

२४. अंत नहीं परमात्मा के गुणों का, या उसकी स्तुति का; और न उसके गुणों के वर्णन का अंत है।

उसकी करणी या रचना का भी अंत नहीं, और न उसके दान का कोई अंत है। उसकी रचना में जो कुछ देखने में और जो कुछ सुनने में आता है उस सबका भी कोई अंत नहीं।

इसका भी अंत नहीं कि उसके मन में इस सारी रचना के रचने का क्या रहस्य है।

न तो उसकी सृष्टि का अंत जाना जा सकता है, और न उसके इस पार का और न उस पार का अंत किसीको मिल सका है।

उसका अंत पाने के लिए कितने ही बिलखते हैं, पर पा नहीं सकते।

उसे कोई नहीं जानता; जितना कि उसके विषय में कहा जाता है उससे भी कहीं अधिक कहने को रह जाता है।

वह स्वामी महान् है, उसका पद ऊँचा है, और उस प्रभु का नाम ऊँचे से भी ऊँचा है।

[**विशेष**—'नाउ' का अर्थ 'प्रकाश' भी किया गया है।]

हाँ, यदि कोई उसके जितना ऊँचा हो, तभी वह उस ऊँचे और महान् स्वामी को समझ सकता है।

वह आपही अपने आपको जानता है कि वह कितना बड़ा है, उसे और कोई नहीं जानता।

नानक, जो कुछभी किसीको मिलता है, वह उसकी बख्शीस है और उसकी कृपा से वह मिलती है।

२५. उसको मेहर और बख्शीस का हिसाब लिखा नहीं जा सकता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

केतिआ गणत नहीं वीचारु । केते खपि तुटहि वेकार ॥
केते लै लै मुकरु पाहि । केते मूरख खाही खाहि ॥
केतिआ दूख भूख सद मार । एहि भि दाति तेरी दातार ॥
बंदिखलासी भाणै होइ । होरु आखि न सकै कोइ ॥
जे को खाइकु आखणि पाइ । ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥
आपे जाणै आपे देइ । आखहि सिभि केई केइ ॥
जिसनो बखसे सिफति सालाह । नानक पातिसाही पातिसाह ॥२५॥
अमुल गुण अमुल वापार । अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥
अमुल आवहि अमुल लै जाहि । अमुल भाइ अमुला समाहि ॥

वह बहुत बड़ा दाता है; उसे तिलभर भी लोभ नहीं।

कितने ही, बल्कि अपार योद्धा, उस दाता से माँगते रहते हैं।

और भी कितने ही, जिनकी गिनती का अनुमान भी नहीं लगा सकते।

कितने ही विकारों से भरे मनुष्य विषयों को भोग-भोगकर शरीर को क्षीण कर देते हैं!

कितने ही (कृतघ्न) ले-लेकर भी इन्कार करते हैं (कि हमें परमेश्वर ने कुछ दिया ही नहीं!)

कितने ही मूढ़ मनुष्य ऐसे हैं, जो केवल पेट भरते रहते हैं!

और कितने ही दुःख और भूख की मार से मरा करते हैं;

दाता! यह भी तेरी बख्शीस है।

बंधनों से छुटकारा तेरी मरज़ी से ही मिलता है; उसमें कोई दख़ल नहीं दे सकता।

कोई मूर्ख यदि उसमें दख़ल देने का यत्न करे तो वही जानेगा, कि उसे क्या सज़ा भोगनी पड़ेगी।

वह खुद ही हमारी आवश्यकताओं को जानता है कि किसे क्या-क्या देना है और वही-वही वह देता है।

पर विरले ही (जो कृतज्ञ होते हैं) ऐसा मानते हैं।

नानक! वह बादशाहों का भी बादशाह है, जिसे कि उसने उसके गुण गाने और कृतज्ञता प्रकट करने की बख्शीस दी है।

२६. अनमोल हैं तेरे गुण और अनमोल है तेरा लेन-देन;
अनमोल हैं तेरे व्यवहार और अनमोल तेरे गुणों के भंडार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अमुलु धरमु अमुलु दीवाणु । अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु । अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ । आखि आखि रहे लिव लाइ ॥
आखहि वेद पाठ पुराण । आखहि पढ़े करहि वखिआण ॥
आखहि बरमे आखहि इन्द । आखहि गोपी तै गोविन्द ॥
आखहि ईसर आखहि सिद्ध । आखहि केते कीते बुद्ध ॥
आखहि दानव आखहि देव । आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥
केते आखांह आखणि पाहि । केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
एते कीते होरि करेहि । ता आखि न सकहि केई केइ ॥

अनमोल हैं वे, जो उन्हें विसाहने आते और विसाहकर ले जाते हैं ।
अनमोल है तेरा प्रेम, और अनमोल हैं वे, जो उसमें डूब गये हैं ।
अनमोल है तेरा न्याय, और अनमोल है तेरा न्यायालय ।
अनमोल है तेरी तोल, और अनमोल तेरा पैमाना ।
अनमोल हैं तेरी बख्शीसें, और अनमोल है तेरी परवानगी का निशाना ।
अनमोल है तेरी कृपा, और अनमोल हैं तेरी आज्ञाएँ ।
अनमोल-ही-अनमोल है तू, कुछ बखान नहीं करते बनता ।
बखान कर-करके भी अंत में चुप हो जाना पड़ा ।
वेदों और पुराणों का पाठ करनेवाले तेरा बखान करते हैं,
और बड़े-बड़े पंडित उनकी व्याख्या करके समझाते हैं ।
ब्रह्मा तेरा बखान करता है, और इन्द्र भी ;
गोपियाँ और कृष्ण, और शिव तेरा वर्णन करते हैं ;
इसी प्रकार गोरखनाथ और सिद्ध भी—
और जिन अनेक बुद्धों को तूने रचा वे भी तुझे बखानते हैं ।
दैत्य और देवता भी तथा सुर, नर, मुनि और भक्तजन तेरे विषय में कहते हैं ।
अनेक कह रहे हैं, और अनेक कहने का यत्न करते हैं—
और कितने ही कहते-कहते उठ जाते हैं ।
जितने तूने रचे हैं इतने ही यदि तू और रच डाले, तब भी कोई तेरा यथार्थ वर्णन नहीं कर सकेगा ।
जितना बड़ा तू चाहे, उतना ही बड़ा हो सकता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जेवडु भावे तेवडु होइ । नानक जाणै साचा सोइ ।
जे को आखै बोलु विगाडु । ता लिखीऐ सिरि गावारा गावार ॥२६॥
सो दरु केहा सो घरु केहा । जितु बहि सरब समाले ॥
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥
केते राग परी सिउ कहिअनि केते गावणहारे ॥
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावहि चित्तु गुपतु लिखिजाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥
गावहि ईसरु वरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥
गावहि इन्द इन्दासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥
गावहि सिद्ध समाधी अन्दरि गावनि साध विचारे ॥
गावहि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥
गावहि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मच्छ पइआले ॥

नानक ! वह स्वयं सत्यरूप ही जानता है कि वह कितना बड़ा है ।

किंतु यदि कोई बकवादी कहने लगे कि तू इतना बड़ा है, तो उसे गँवार से भी गँवार लेखना चाहिए ।

२७. तेरा वह कैसा द्वार होगा, और कैसा वह घर होगा, जहाँ तू बैठा-बैठा सारी सृष्टि की सँभाल रखता है ?

वहाँ अगणित और अनेक प्रकार के बाजे बज रहे हैं ; और उन्हें बजानेवाले भी कितने होंगे वहाँ !

कितने ही राग-रागिनियों के गान कितने ही गायक वहाँ गाये जा रहे हैं ! तेरा गुण-गान पवन, जल और अग्नि करते हैं;

धर्मराज तेरे द्वार पर बैठा वहाँ गा रहा है ।

और चित्रगुप्त—मनुष्यों के कर्मों का लेखा रखनेवाला—तेरा गान गाता है ।

शिव, ब्रह्मा और शक्ति, जिन्हें तूने सँवारा है, तेरा यश गाते हैं ।

सिंहासन पर बैठा हुआ इन्द्र भी, देवगणों के साथ, तेरे गुण गा रहा है ।

सिद्धजन समाधि लगाये हुए, और साधुजन ध्यान में मग्न तेरा ही गुणानुवाद करते हैं ।

यति, सत्य-साधक और संतोषी तथा भारी-भारी शूरवीर तेरी कीर्ति का गान करते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गावहि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥
गावहि खंड मउल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे मगत रसाले ॥
होरि केते गावहि से मैं चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वाड आई ॥
जो तिसु भावै सोई करसी हुकुम न करणा जाई ॥
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥

वेदपाठी बड़े-बड़े पंडित और ऋषि युग-युग से तेरा गुण-गान करते आ रहे हैं।

मोहिनी सुन्दर स्त्रियाँ स्वर्गों की, मध्यलोकों की और पातालों की तेरे गुण गाती हैं।

तूने जो रत्न उत्पन्न किये हैं वे, और अड़सठ तीर्थ तेरा गायन करते हैं।

बड़े-बड़े बलवान योद्धा तेरी महिमा गा रहे हैं;

और चारों ही प्रकार के जीव—अंडज, पिंडज, स्वेदज और उद्भिज। समस्त ब्रह्माण्ड, उसके खंड और लोक सभी गा रहे हैं, जिन्हें कि रचकर तूने सहारा दे रखा है।

वे ही तेरा गुण-गान करते हैं, जो कि तुझे भाते हैं, और जो तेरे अनुराग-रस में डूबे हुए हैं।

और भी कितने ही तेरा गुण-गान करते हैं, जो मुझे याद नहीं आ रहे हैं।

नानक उन्हें कैसे गिनाये ?

सच्चा, सच्चे नामवाला वह स्वामी सदा वैसे-का-वैसा एकरस रहता है।

जिसने सारी सृष्टि को रचा है, वही अब है, और आगे भी वही रहेगा।

रंग-रंग की, तरह-तरह की यह रचना जिसने रची है, वह उसे रच-रचकर जैसा कि वह बड़ा है उसीके अनुसार उसकी सार-सँभाल कर रहा है।

वह वही करता है जो उसे भाता है; उसे यह नहीं कह सकते कि, 'ऐसा कर, और ऐसा न कर।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding. f

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि विभूति ।।
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ।।
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ।।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ।।२८।।
भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ।।
आपि नाथु नाथी सभ जा की रिद्धि सिद्धि अवरा साद ।।
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ।।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ।।२९।।

वह स्वामी बादशाहों का भी बादशाह है ।
सब-कुछ उसीकी इच्छा पर निर्भर है ।

२८. मुद्राएँ तू संतोष और शील की बना, और (स्वमानयुक्त) उद्यम की झोली;
और (परमात्मा के) ध्यान की लगाले भस्म ।
काल का (सतत) स्मरण ही तेरी कंथा हो;
और देह को–अपनी रहनी को–कुमारी कन्या की तरह पवित्र रख, और श्रद्धा को अपना दंड बनाले ।
सबको तू अपनी ही जमात का समझ; मानो सारे मनुष्य तेरे 'आईपंथ' के ही हैं ।
[**विशेष**—योगियों के बारह पंथों में से एक पंथ 'आई पंथ' है ।]
और यह मान कि मन को जीत लिया तो जगत् को जीत लिया ।
'आदेश, अर्थात् प्रणाम उसीको कर, जो 'आदि ईश' है ।
[**विशेष**—नाथपंथी योगी आपस में एक दूसरे को 'आदेश' कहकर प्रणाम करते हैं ।]
जो आदि है, जो शुभ्र है, जो अनादि है, जिसका अंत नहीं और युग-युग से जो 'एकरूप' ही है ।

२९. आध्यात्मिक ज्ञान का तू भोजन कर और दया को बनाले अपना भंडारी ।
घट-घट में जो नाद बज रहा है वह तेरी सारंगी है ।
जिसने सारी सृष्टि को (अपनी डोरी से) नाथ रखा है, वही है नाथ तेरा ।
ऋद्धियों और सिद्धियों की (तुच्छ) करामात तेरे लिए नहीं, दूसरों के लिए है→

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाइ दीवाणु ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥
आहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

आसणु लोइ लोइ भंडार । जो कछु पाइआ सु एका वार ॥
करि करि वेखै सिरजणहारु । नानक सचे की साची कार ॥
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥

[वे प्रभु के रास्ते से दूर भटकाकर ले जाती हैं ।]
संयोग और वियोग ये दोनों नियम जगत् का नियंत्रण कर रहे हैं–

हमारे भाग्य से हमें अपना भाग मिलता है । 'आदेश' अर्थात् प्रणाम उसीको कर, जो आदि है, जो शुभ्र है, जो अनादि हैं, जिसका अंत नहीं, और युग-युग से जो 'एकरूप' ही है ।

३०. एक माया को किसी युक्ति से प्रसव हुआ, और तीन चेले या पुत्र उससे जनमें–
एक तो संसार को रचनेवाला, दूसरा पालन-पोषण की सामग्री रखनेवाला भंडारी और तीसरा मृत्यु-दंड देनेवाला न्यायाधीश—अर्थात्, ब्रह्मा, विष्णु और शिव ।
परमात्मा जैसा चाहता है, वैसी आज्ञा उन्हें देता है, और वैसे ही सारी सृष्टि को चलाता है ।
वह तो उन्हें देखता है, पर वह उनको नहीं दीखता ।
यह बहुत अद्भुत है ।
'आदेश' अर्थात् प्रणाम उसीको कर,
जो आदि है, जो शुभ्र है, जो अनादि है, जिसका अंत नहीं, और युग-युग से जो 'एकरूप' ही है ।

३१. लोक-लोक में उसका आसन है; और लोक-लोक में उसका भंडार ।
उनमें जो कुछ रखना था वह एक बार ही रख दिया है ।
वह सिरजनहार सृष्टि को रच-रचकर उसे देखता और सँभालता है ।
नानक ! उस सच्चे (परमात्मा) का काम भी सच्चा है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding. I

इकदू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़िऐ होइ इकीस ॥
सुणि गल्ला आकास की कोटा आई रीस ॥
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु । जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु । जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥
जोरु न सुरती गिआनि विचारि । जोरु न जुगति छुटै संसारु ॥
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ । नानक उत्तमु नीचु न कोइ ॥३३॥

राती रुती थिती वार । पवन पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल ॥

'आदेश' अर्थात् प्रणाम उसीको कर,
जो आदि है, जो शुभ्र है, जो अनादि है, जिसका अंत नहीं, और युग-युग से जो 'एकरूप' ही है ।

३२. एक जीभ की जगह यदि मेरी लाख जीभें हो जायें, और लाख से वीस लाख, तोभी एक-एक जीभ से मैं लाख-लाख वार एक जगदीश्वर का ही नाम जपूँगा ।
इस प्रकार मैं उस स्वामी के मार्ग की सीढ़ियों से चढ़कर उसमें लीन हो जाऊँगा ।
वहाँ की, उस गगन-मंडल की बातें सुन-सुनकर अधम-से-अधम जीव को भी उस स्वामी से मिलने की ईर्ष्या होने लगती है ।
नानक ! पर उससे मिलना तो उसकी कृपा-दृष्टि से ही होता है ।
बाक़ी सब झूठी बकवास है झूठों की ।

३३. न तो मेरी शक्ति कहने की है, और न चुप रहने की ही ।
न माँगने की शक्ति है, और न देने की ही ।
न जीने की शक्ति है, और न मरने की ही ।
राज्य और सम्पत्ति को प्राप्त करने की भी मुझमें शक्ति नहीं है,
जिनके लिए चित्त इतना चंचल रहता है ।
न मेरे पास वह शक्ति है, जिससे कि ध्यान और ज्ञान का चिंतन कर सकूँ ।
और न उस युक्ति को खोज निकालने की ही शक्ति है, जिससे कि संसार के बन्धन से छूट जाऊँ ।
जिस (प्रभु) के हाथ में शक्ति है, वही सब रचना रचता है, और वही उसे

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तिसु विचि जीअ जुगति के रंग । तिनके नाम अनेक अनंत ॥
करमी करमी होइ वीचारु । सचा आपि सचा दरबारु ॥
तिथै सोहनि पंच परवाणु । नदरी करमी पवै नीसाणु ॥
कच पकाई ओथै पाइ । नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

धरमखंड का एहो धरमु ॥
गिआनखंड का आखहु करमु ॥
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान्ह महेस ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूपरंग के वेस ॥
केतीआ करमभूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
केते इन्द चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥

सँभालता है ।

नानक ! (ईश्वर के आगे) अपनी शक्ति से न तो कोई ऊँच हो सकता है, और न कोई नीच ।

३४. रात्रियों, ऋतुओं, तिथियों और वारों तथा वायु, जल, अग्नि और पाताल के बीच में पृथिवी को मानों धर्म का मन्दिर बनाकर उसने रखा है ।

उस पृथिवी में उसने नाना स्वभावों और नाना प्रकारों के जीव रख दिये हैं ; उनके अनेक और अनंत नाम हैं ।

उन सबको अपने-अपने कर्मों के अनुसार न्याय मिलता है ।

वह सच्चा है, और न्यायालय उसका सच्चा है ।

वहाँ, उसके दरबार में, उसके चुने हुए ही शोभा और प्रतिष्ठा पाते हैं ।

उन्हें ही उसकी दया-दृष्टि और कृपा से वहाँ परवानगी मिलती है ।

कच्चे और पक्के की परख भी वहींपर होती है ।

नानक ! वहाँ पहुँचकर ही इसका पता लगता है ।

३५. धर्मखंड का—कर्त्तव्य कर्म के पद का यह वर्णन है ;

अब ज्ञानखंड अर्थात् तत्त्व-विचार के पद की दशा का वर्णन करता हूँ ।

कितने पवन, कितने जल और कितने अग्नितत्त्व दीख रहे हैं !

कितने कृष्ण और कितने शिव और कितने ब्रह्मा दीखते हैं अनेक रूपों और रंगों की रचना रचते हुए !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding. F

केतीआ खाणी केतीआ वाणी केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥
गिआनखंडमहि गिआनु परचंडु ॥ तिथै नाद-विनोद कोड अनंदु ॥
सरमखंड की वाणी रूपु ॥ तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥
ताकीआ गला कथीआ न जाहि ॥ जेको कहै पिछै पछुताइ ॥
तिथै घड़ीऐ सुरति-मति मनि-बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सूरा-सिधा की सुधि ॥३६॥
करमखंड की वाणी जोरु । तिथै होरु न कोई होरु ॥
तिथै जोध महाबल सूर । तिनि महि रामु रहिआ भरपूर ॥

कितनी ही कर्मभूमियाँ और कितने ही सुमेरु पर्वत दीख रहे हैं वहाँ !

कितने ही ध्रुव और कितने ही ज्ञानोपदेश लेनेवाले दीखते हैं !

वहाँ कितने ही इन्द्र, कितने ही चन्द्र, कितने ही सूर्य और कितने ही नक्षत्र-मंडल और लोक दीख रहे हैं ।

कितने ही सिद्ध, बुद्ध और नाथ !

कितनी ही देवियाँ और अनेक नानारूप दीखते हैं वहाँ !

कितने ही देवता, दानव और मुनि,

तथा कितने ही समुद्र और उनमें से निकले हुए रत्न वहाँ दीख रहे हैं !

जीवों की कितनी ही खानें और कितनी ही उनकी बोलियाँ वहाँ दीख रही हैं ! और राजाओं की कितनी ही वंशावलियाँ !

नानक ! वहाँ कितने ही ध्यानावस्थित और भक्तजन दीखेंगे, जिनका कोई अन्त नहीं !

३६. उस ज्ञानखंड में, आत्म-विचार की उस दशा में, ज्ञान-ही-ज्ञान प्रज्वलित रहता है ।

वहाँ ऐसा नाद सुनाई देता है, जिससे आनन्द की करोड़ों वृत्तियाँ विकसित होती हैं ।

आनंद-खंड में पहुँचने से सुन्दर-सुन्दर वाणियाँ फूटती हैं ।

वहाँ की, उस खंड की रचना अनुपम है ।

वर्णनातीत है वह अवस्था । यदि कोई वर्णन करने का यत्न करेगा, तो उसे लज्जित होना पड़ेगा ।

वहाँ ज्ञान-विज्ञान और मन की विशुद्ध वृत्तियों का सृजन होता है,

और सिद्धों और महात्माओं के ऊँचे मनोभावों का भी ।

३७. कर्मखंड अर्थात् आचरित (अमली) अवस्था में पहुँचे हुए (साधक) के कार्य-कलाप सबल होते हैं ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

तिथै सीतो सीता महिमा माहि । ताके रूप न कथने जाहि ॥
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि । जिनकै रामु वसै मन माहि ॥
तिथै भगत वसहि के लोअ । करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥
सचखंडि वसै निरंकार । करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड । जे को कथै त अंत न अंत ॥
तिथै लोअ लोअ आकार । जिव जिव हुकम तिवै तिवकार ॥
वेखै विगसै करि वीचारु । नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥
जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु । अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
भउ खल्ला अगनि तपताउ ॥ भांडा भांड़ अमृत तितु ढालि ॥

उस अवस्था को और कोई नहीं पहुँचता; केवल महान् बली शूर-वीर ही वहाँ पहुँच पाते हैं।

उनमें राम (का बल) कूट-कूटकर भरा हुआ होता है।

(राम की) उस महिमा में सीता-ही-सीता रहती हैं, जिनके रूप का वर्णन नहीं हो सकता।

[अर्थात, जहाँ सच्चे पुरुषार्थ की महिमा है, वहाँ सीता-जैसी पवित्रता निवास करती है।]

वे न मारे जा सकते हैं, न उन्हें कोई ठग सकता है,

जिनके कि हृदय में राम बस रहा है।

वहाँ (प्रभु के) भक्तों की मंडली निवास करती है;

वे आनंदित रहते हैं, क्योंकि उनके हृदय में सत्यरूप परमात्मा वास करता है।

सत्यखंड में स्वयं निराकार परमेश्वर का वास है।

जो सृष्टि को रच-रचकर दया-दृष्टि से उसे निहाल करता है।

वहाँ पहुँचकर (सत्य का साधक) देखता है अनेक खंड, अनेक लोक और अनेक ब्रह्माण्ड।

कौन उनका वर्णन कर सकता है ? कहीं उनका अंत ही नहीं।

वहाँ लोकों के ऊपर भी लोक हैं, और उनमें आकार-पर-आकार रचे हुए हैं।

परमात्मा जैसी-जैसी आज्ञा देता है, वैसे-वैसे ही काम वहाँ संपन्न होते हैं।

देख-देखकर और विचार-विचारकर वह प्रसन्न होता है।

नानक ! उसका वर्णन करना असंभव है। [लोहे के जैसा कठिन है।]

३८. संयम को तू भट्ठी बना, और धैर्य को अपना सुनार;

बुद्धि को बना अहरण (निहाई) और आत्म-ज्ञान को हथौड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिनि कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

सलोक

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
दिवस राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरम हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नाम धिआइआ गए मसक्कति घालि ॥
नानक ते मुख उज्जले केती छुट्टी नालि ॥१॥*

(**विशेष**–'वेदु' का अर्थ 'गुरु-वाणी' भी किया गया है।)
परमात्मा के भय की धौंकनी फूक, और तप की अग्नि जला।
प्रेम-भाव का साँचा बनाकर उसमें नाम का अमृत ढाललें।
उसी सच्ची टकसाल में 'शब्द' अर्थात् ऊँचा आचरण घड़ा जा सकेगा।
ऐसा काम वही कर सकते हैं, जिनपर कि प्रभुने कृपा-दृष्टि करदी है,
नानक ! मेरा प्रभु एक ही कृपा-दृष्टि से निहाल कर देता है।

१. पवन गुरु है, जल हमारा पिता है, और इतनी बड़ी पृथिवी है हमारी माता ;

(**विशेष**–पवन को गुरु यहाँ इसलिए कहा है कि वह परमात्म-ज्ञान का मंत्र फूकता है; जल का गुण जीवन-दान देना है, इसीलिए उसका एक नाम 'जीवन' भी है, अतः वह पितृतुल्य है; पृथिवी पोषण करती है माता के समान ; दिन कर्म में लगाता है; और रात विश्राम देती है।)

दिन और रात ये दोनों हमारी धायें हैं, जिनकी गोद में सारा जगत् खेलता है।

धर्म हमारा न्यायाधीश है, जो अच्छे और बुरे कर्मों को अपने आगे जाँचता है, हमारे कर्म हममें से किसीको तो परमात्मा के निकट ले जाते हैं, और किसीको उससे दूर फेंक देते हैं।

जिन्होंने नाम का अभ्यास किया है, वे अपना श्रम सफल कर गये।

नानक ! उनके मुख प्रकाशमान हैं, उनके सत्संग से कितने ही लोग (भव-बंधन से) मुक्त हो गये।

* यह सलोक 'माझ की वार' में गुरु अंगदकृत लिखा हुआ है ; थोड़ा-साहो पाठान्तर है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वियोगी हरिजी की अन्य पुस्तकें

१. संत सुधासार
२. बुद्ध-वाणी
३. श्रद्धाकण
४. पावभर आटा
५. मेरा जीवनप्रभात
६. प्रार्थना
७. संतवाणी

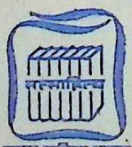

पैंतीस नयेपैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand